



Mr.brijesh Singh dhanker

24 Nov 1975

06:45 PM

Rohtak

Model: All-Dosha-Report

Order No: 119582801

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 24/11/1975
दिन _____: सोमवार
जन्म समय _____: 18:45:00 घंटे
इष्ट _____: 29:39:02 घटी
स्थान _____: Rohtak
राज्य _____: Haryana
देश _____: India

अक्षांश _____: 28:54:00 उत्तर
रेखांश _____: 76:38:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:23:28 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 18:21:32 घंटे
वेलान्तर _____: 00:13:30 घंटे
साम्पातिक काल _____: 22:33:01 घंटे
सूर्योदय _____: 06:53:23 घंटे
सूर्यास्त _____: 17:26:30 घंटे
दिनमान _____: 10:33:07 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: हेमन्त
सूर्य के अंश _____: 08:06:27 वृश्चिक
लग्न के अंश _____: 29:06:01 वृष

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: वृष - शुक्र
राशि-स्वामी _____: कर्क - चन्द्र
नक्षत्र-चरण _____: पुष्य - 4
नक्षत्र स्वामी _____: शनि
योग _____: ब्रह्म
करण _____: वणिज
गण _____: देव
योनि _____: मेष
नाड़ी _____: मध्य
वर्ण _____: विप्र
वश्य _____: जलचर
वर्ग _____: श्वान
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: जल
जन्म नामाक्षर _____: डा-डालचंद
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: ताम्र - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: धनु

पंचांग

दादा का नाम _____ :
 पिता का नाम _____ :
 माता का नाम _____ :
 जाति _____ :
 गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1897	मार्गशीर्ष	3
पंजाबी	संवत : 2032	मार्गशीर्ष	9
बंगाली	सन् : 1382	मार्गशीर्ष	8
तमिल	संवत : 2032	कार्तिक	8
केरल	कोल्लम : 1151	वृश्चिक	8
नेपाली	संवत : 2032	मार्गशीर्ष	9
चैत्रादि	संवत : 2032	मार्गशीर्ष	कृष्ण 6
कार्तिकादि	संवत : 2032	कार्तिक	कृष्ण 6

पंचांग

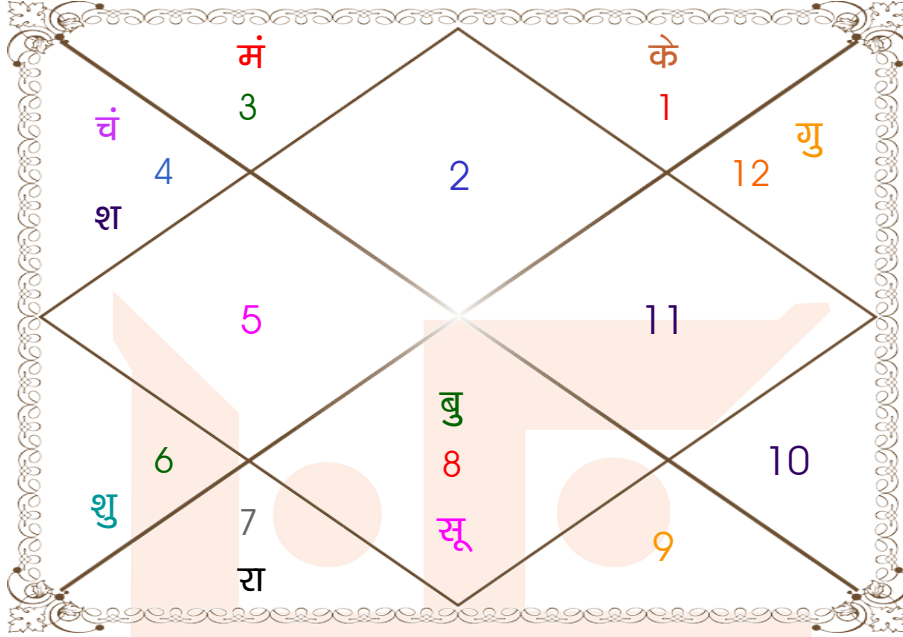
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 6
 तिथि समाप्ति काल _____ : 26:52:00
 जन्म तिथि _____ : 6
 सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : पुष्य
 नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 20:15:19 घंटे
 जन्म योग _____ : पुष्य
 सूर्योदय कालीन योग _____ : शुक्ल
 योग समाप्ति काल _____ : 12:20:42 घंटे
 जन्म योग _____ : ब्रह्म
 सूर्योदय कालीन करण _____ : गर
 करण समाप्ति काल _____ : 15:31:38 घंटे
 जन्म करण _____ : वणिज
 भयात _____ : 55:05:08
 भोग _____ : 58:50:56
 भोग्य दशा काल _____ : शनि 1 वर्ष 2 मा 20 दि

घात चक्र

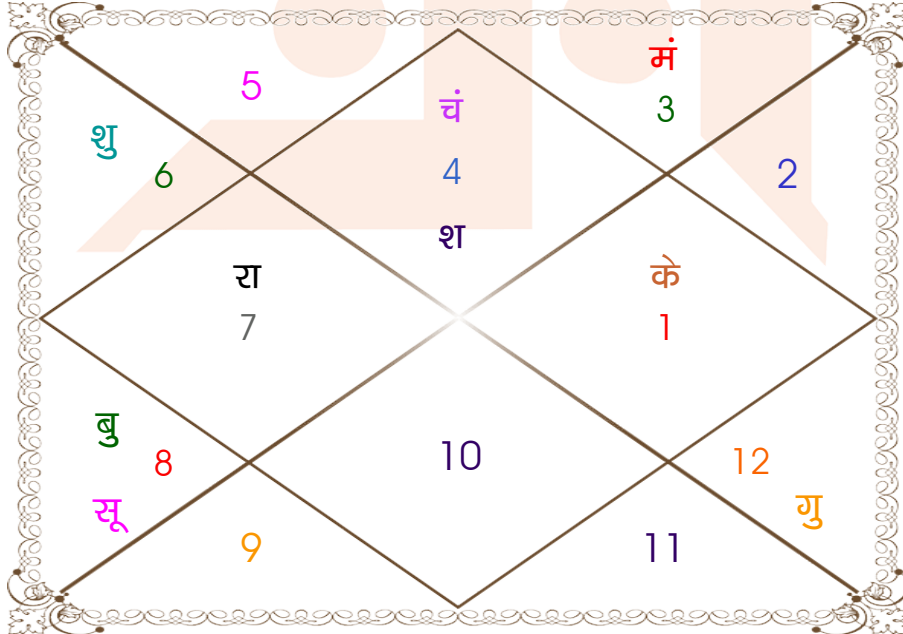
मास _____ : पौष
 तिथि _____ : 2-7-12
 दिन _____ : बुधवार
 नक्षत्र _____ : अनुराधा
 योग _____ : व्याघात
 करण _____ : नाग
 प्रहर _____ : 1
 वर्ग _____ : मेष
 लग्न _____ : तुला
 सूर्य _____ : सिंह
 चन्द्र _____ : सिंह
 मंगल _____ : कन्या
 बुध _____ : मिथुन
 गुरु _____ : तुला
 शुक्र _____ : वृश्चिक
 शनि _____ : कर्क
 राहु _____ : धनु

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

गु	के	ल	मं
			श चं
	बु सू	रा	शु

लग्न कुंडली

ल	के	गु
मं		
श चं		
शु	रा	सू बु

विंशोत्तरी
शनि 1वर्ष 2मा 20दि
शनि

24/11/1975

14/02/2078

शनि	13/02/1977
बुध	14/02/1994
केतु	13/02/2001
शुक्र	13/02/2021
सूर्य	14/02/2027
चन्द्र	13/02/2037
मंगल	14/02/2044
राहु	14/02/2062
गुरु	14/02/2078

योगिनी
धान्या 0वर्ष 2मा 9दि
उल्का

02/02/2021

03/02/2027

उल्का	02/02/2022
सिद्धा	04/04/2023
संकटा	03/08/2024
मंगला	03/10/2024
पिंगला	02/02/2025
धान्या	04/08/2025
भ्रामरी	04/04/2026
भद्रिका	03/02/2027



FUTUREPOINT
Astro Solutions



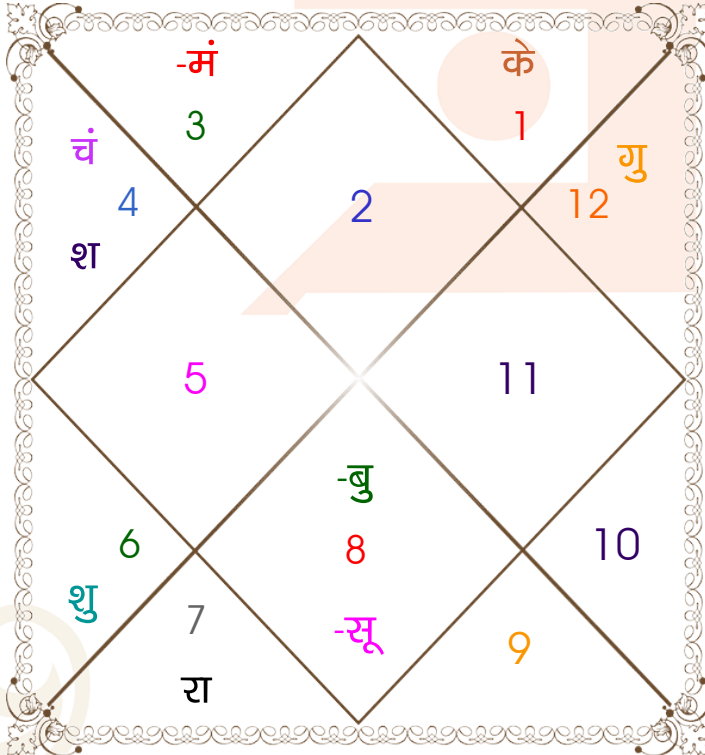
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			वृष	29:06:01	343:43:55	मृगशिरा	2	5	शुक्र	मंगल	शनि	---
सूर्य			वृश्चि	08:06:27	01:00:40	अनुराधा	2	17	मंगल	शनि	केतु	मित्र राशि
चंद्र			कर्क	15:48:28	13:41:17	पुष्य	4	8	चंद्र	शनि	गुरु	स्वराशि
मंगल	व		मिथु	06:47:51	00:15:21	आर्द्रा	1	6	बुध	राहु	राहु	शत्रु राशि
बुध		अ	वृश्चि	05:39:10	01:35:00	अनुराधा	1	17	मंगल	शनि	बुध	सम राशि
गुरु	व		मीन	21:39:56	00:03:17	रेवती	2	27	गुरु	बुध	सूर्य	स्वराशि
शुक्र			कन्या	22:25:30	01:06:12	हस्त	4	13	बुध	चंद्र	शुक्र	नीच राशि
शनि	व		कर्क	09:21:49	00:01:05	पुष्य	2	8	चंद्र	शनि	शुक्र	शत्रु राशि
राहु	व		तुला	28:12:41	00:00:49	विशाखा	3	16	शुक्र	गुरु	शुक्र	मित्र राशि
केतु	व		मेष	28:12:41	00:00:49	कृतिका	1	3	मंगल	सूर्य	चंद्र	मित्र राशि
हर्ष			तुला	11:03:08	00:03:28	स्वाति	2	15	शुक्र	राहु	शनि	---
नेप			वृश्चि	17:37:21	00:02:14	ज्येष्ठा	1	18	मंगल	बुध	बुध	---
प्लूटो			कन्या	17:27:01	00:01:39	हस्त	3	13	बुध	चंद्र	शनि	---
दशम भाव			कुंभ	12:58:49	--	शतभिषा	--	24	शनि	राहु	बुध	--

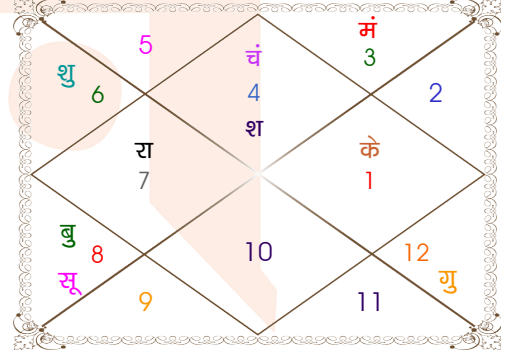
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:31:26

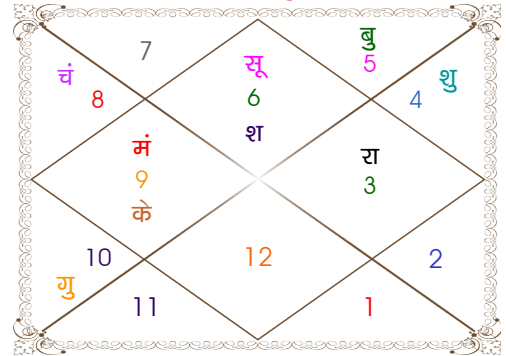
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	वृष 11:24:49	वृष 29:06:01
2	मिथुन 11:24:49	मिथुन 23:43:37
3	कर्क 06:02:25	कर्क 18:21:13
4	सिंह 00:40:01	सिंह 12:58:49
5	कन्या 00:40:01	कन्या 18:21:13
6	तुला 06:02:25	तुला 23:43:37
7	वृश्चिक 11:24:49	वृश्चिक 29:06:01
8	धनु 11:24:49	धनु 23:43:37
9	मकर 06:02:25	मकर 18:21:13
10	कुम्भ 00:40:01	कुम्भ 12:58:49
11	मीन 00:40:01	मीन 18:21:13
12	मेष 06:02:25	मेष 23:43:37

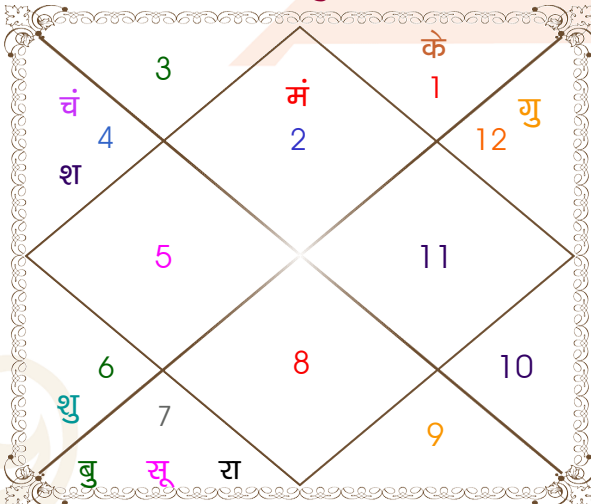
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	वृष 29:06:01	
2	मिथुन 22:12:54	
3	कर्क 15:43:40	
4	सिंह 12:58:49	
5	कन्या 16:14:17	
6	तुला 23:39:50	
7	वृश्चिक 29:06:01	
8	धनु 22:12:54	
9	मकर 15:43:40	
10	कुम्भ 12:58:49	
11	मीन 16:14:17	
12	मेष 23:39:50	

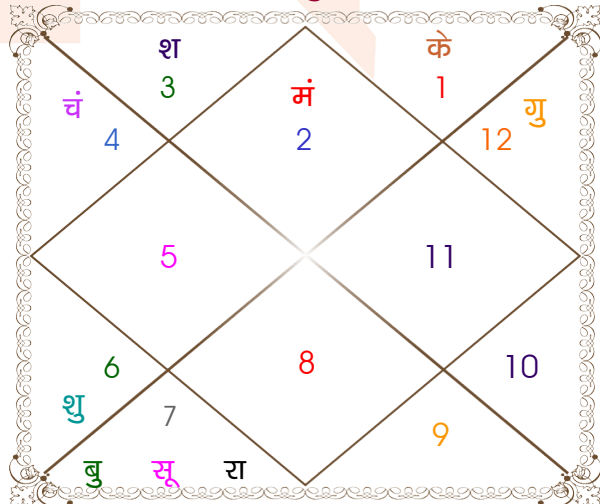
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद
उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु

चलित कुंडली



भाव कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



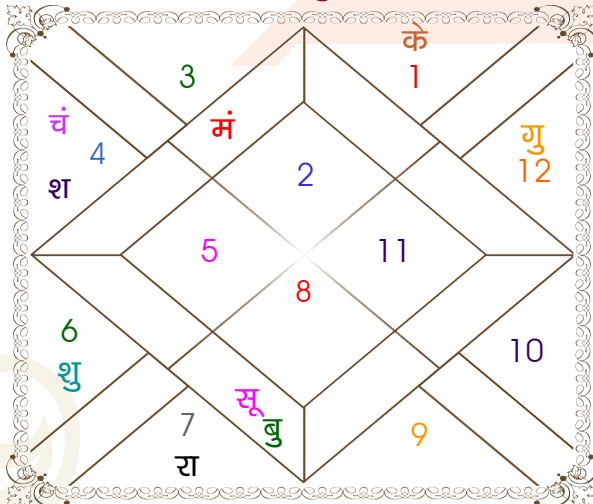
कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	----- कारक -----	----- अवस्था -----	
	चर	स्थिर	बालादि दीप्तादि शयनादि रश्मि ग्रह बल
सूर्य	पुत्र	पितृ	वृद्ध मुदित आगमन 1.56 26 %
चंद्र	भ्रातृ	मातृ	युवा स्वस्थ कौतुक 8.04 44 %
मंगल	ज्ञाति	भ्रातृ	कुमार खल भोजन 0.57 36 %
बुध	कलत्र	ज्ञाति	मृत विकल सभा 0.00 35 %
गुरु	अमात्य	धन	कुमार स्वस्थ निद्रा 4.47 63 %
शुक्र	आत्मा	कलत्र	कुमार भीत भोजन 0.27 62 %
शनि	मातृ	आयु	वृद्ध खल नेत्रपाणि 0.88 32 %
राहु	---	ज्ञान	मृत मुदित नेत्रपाणि 0.00 74 %
केतु	---	मोक्ष	मृत मुदित आगमन 0.00 0 %
कुल			15.79

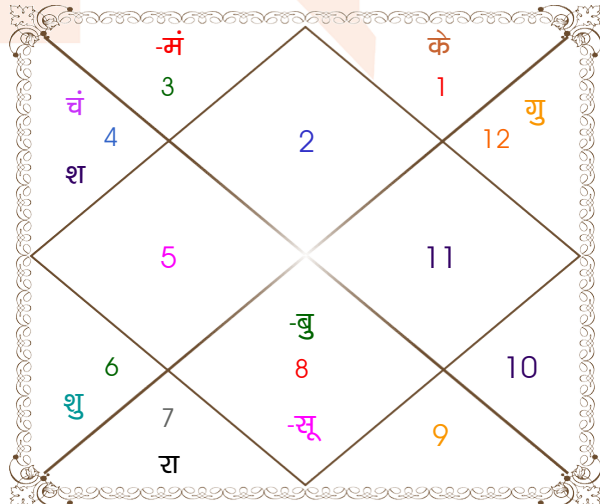
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पूर्वाफाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद
उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु

चलित कुंडली



लग्न-चलित



FUTUREPOINT
Astro Solutions



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शनि 1 वर्ष 2 मास 20 दिन

शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष
24/11/1975	13/02/1977	14/02/1994	13/02/2001	13/02/2021
13/02/1977	14/02/1994	13/02/2001	13/02/2021	14/02/2027
00/00/0000	बुध 13/07/1979	केतु 13/07/1994	शुक्र 15/06/2004	सूर्य 03/06/2021
00/00/0000	केतु 09/07/1980	शुक्र 12/09/1995	सूर्य 15/06/2005	चंद्र 03/12/2021
00/00/0000	शुक्र 10/05/1983	सूर्य 18/01/1996	चंद्र 14/02/2007	मंगल 09/04/2022
00/00/0000	सूर्य 16/03/1984	चंद्र 18/08/1996	मंगल 15/04/2008	राहु 04/03/2023
00/00/0000	चंद्र 15/08/1985	मंगल 14/01/1997	राहु 16/04/2011	गुरु 21/12/2023
00/00/0000	मंगल 12/08/1986	राहु 01/02/1998	गुरु 15/12/2013	शनि 02/12/2024
00/00/0000	राहु 01/03/1989	गुरु 08/01/1999	शनि 13/02/2017	बुध 09/10/2025
24/11/1975	गुरु 06/06/1991	शनि 17/02/2000	बुध 15/12/2019	केतु 14/02/2026
गुरु 13/02/1977	शनि 14/02/1994	बुध 13/02/2001	केतु 13/02/2021	शुक्र 14/02/2027
चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष
14/02/2027	13/02/2037	14/02/2044	14/02/2062	14/02/2078
13/02/2037	14/02/2044	14/02/2062	14/02/2078	24/11/2095
चंद्र 15/12/2027	मंगल 13/07/2037	राहु 27/10/2046	गुरु 03/04/2064	शनि 16/02/2081
मंगल 15/07/2028	राहु 31/07/2038	गुरु 22/03/2049	शनि 15/10/2066	बुध 28/10/2083
राहु 14/01/2030	गुरु 07/07/2039	शनि 27/01/2052	बुध 20/01/2069	केतु 05/12/2084
गुरु 16/05/2031	शनि 15/08/2040	बुध 15/08/2054	केतु 27/12/2069	शुक्र 05/02/2088
शनि 14/12/2032	बुध 12/08/2041	केतु 03/09/2055	शुक्र 27/08/2072	सूर्य 17/01/2089
बुध 16/05/2034	केतु 08/01/2042	शुक्र 03/09/2058	सूर्य 15/06/2073	चंद्र 18/08/2090
केतु 15/12/2034	शुक्र 10/03/2043	सूर्य 28/07/2059	चंद्र 15/10/2074	मंगल 27/09/2091
शुक्र 15/08/2036	सूर्य 16/07/2043	चंद्र 26/01/2061	मंगल 21/09/2075	राहु 03/08/2094
सूर्य 13/02/2037	चंद्र 14/02/2044	मंगल 14/02/2062	राहु 14/02/2078	गुरु 24/11/2095

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशों के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शनि 1 वर्ष 2 मा 17 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - बुध 02/12/2024 09/10/2025	सूर्य - केतु 09/10/2025 14/02/2026	सूर्य - शुक्र 14/02/2026 14/02/2027	चंद्र - चंद्र 14/02/2027 15/12/2027	चंद्र - मंगल 15/12/2027 15/07/2028
बुध 15/01/2025 केतु 02/02/2025 शुक्र 26/03/2025 सूर्य 11/04/2025 चंद्र 07/05/2025 मंगल 25/05/2025 राहु 10/07/2025 गुरु 21/08/2025 शनि 09/10/2025	केतु 16/10/2025 शुक्र 07/11/2025 सूर्य 13/11/2025 चंद्र 24/11/2025 मंगल 01/12/2025 राहु 20/12/2025 गुरु 06/01/2026 शनि 27/01/2026 बुध 14/02/2026	शुक्र 15/04/2026 सूर्य 04/05/2026 चंद्र 03/06/2026 मंगल 25/06/2026 राहु 18/08/2026 गुरु 06/10/2026 शनि 03/12/2026 बुध 24/01/2027 केतु 14/02/2027	चंद्र 11/03/2027 मंगल 29/03/2027 राहु 14/05/2027 गुरु 23/06/2027 शनि 10/08/2027 बुध 23/09/2027 केतु 10/10/2027 शुक्र 30/11/2027 सूर्य 15/12/2027	मंगल 28/12/2027 राहु 29/01/2028 गुरु 26/02/2028 शनि 31/03/2028 बुध 30/04/2028 केतु 12/05/2028 शुक्र 17/06/2028 सूर्य 28/06/2028 चंद्र 15/07/2028
चंद्र - राहु 15/07/2028 14/01/2030	चंद्र - गुरु 14/01/2030 16/05/2031	चंद्र - शनि 16/05/2031 14/12/2032	चंद्र - बुध 14/12/2032 16/05/2034	चंद्र - केतु 16/05/2034 15/12/2034
राहु 05/10/2028 गुरु 18/12/2028 शनि 14/03/2029 बुध 31/05/2029 केतु 02/07/2029 शुक्र 01/10/2029 सूर्य 29/10/2029 चंद्र 13/12/2029 मंगल 14/01/2030	गुरु 20/03/2030 शनि 05/06/2030 बुध 13/08/2030 केतु 11/09/2030 शुक्र 01/12/2030 सूर्य 25/12/2030 चंद्र 04/02/2031 मंगल 04/03/2031 राहु 16/05/2031	शनि 16/08/2031 बुध 06/11/2031 केतु 09/12/2031 शुक्र 15/03/2032 सूर्य 13/04/2032 चंद्र 31/05/2032 मंगल 04/07/2032 राहु 28/09/2032 गुरु 14/12/2032	बुध 26/02/2033 केतु 28/03/2033 शुक्र 22/06/2033 सूर्य 18/07/2033 चंद्र 30/08/2033 मंगल 29/09/2033 राहु 16/12/2033 गुरु 23/02/2034 शनि 16/05/2034	केतु 28/05/2034 शुक्र 03/07/2034 सूर्य 14/07/2034 चंद्र 31/07/2034 मंगल 13/08/2034 राहु 14/09/2034 गुरु 12/10/2034 शनि 15/11/2034 बुध 15/12/2034
चंद्र - शुक्र 15/12/2034 15/08/2036	चंद्र - सूर्य 15/08/2036 13/02/2037	मंगल - मंगल 13/02/2037 13/07/2037	मंगल - राहु 13/07/2037 31/07/2038	मंगल - गुरु 31/07/2038 07/07/2039
शुक्र 26/03/2035 सूर्य 26/04/2035 चंद्र 16/06/2035 मंगल 21/07/2035 राहु 20/10/2035 गुरु 10/01/2036 शनि 15/04/2036 बुध 10/07/2036 केतु 15/08/2036	सूर्य 24/08/2036 चंद्र 08/09/2036 मंगल 19/09/2036 राहु 16/10/2036 गुरु 09/11/2036 शनि 08/12/2036 बुध 03/01/2037 केतु 14/01/2037 शुक्र 13/02/2037	मंगल 22/02/2037 राहु 16/03/2037 गुरु 05/04/2037 शनि 29/04/2037 बुध 20/05/2037 केतु 29/05/2037 शुक्र 23/06/2037 सूर्य 30/06/2037 चंद्र 13/07/2037	राहु 08/09/2037 गुरु 29/10/2037 शनि 29/12/2037 बुध 21/02/2038 केतु 16/03/2038 शुक्र 19/05/2038 सूर्य 07/06/2038 चंद्र 09/07/2038 मंगल 31/07/2038	गुरु 14/09/2038 शनि 07/11/2038 बुध 26/12/2038 केतु 15/01/2039 शुक्र 12/03/2039 सूर्य 29/03/2039 चंद्र 27/04/2039 मंगल 17/05/2039 राहु 07/07/2039

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - शनि 07/07/2039 15/08/2040	मंगल - बुध 15/08/2040 12/08/2041	मंगल - केतु 12/08/2041 08/01/2042	मंगल - शुक्र 08/01/2042 10/03/2043	मंगल - सूर्य 10/03/2043 16/07/2043
शनि 09/09/2039 बुध 05/11/2039 केतु 29/11/2039 शुक्र 04/02/2040 सूर्य 25/02/2040 चंद्र 29/03/2040 मंगल 22/04/2040 राहु 22/06/2040 गुरु 15/08/2040	बुध 05/10/2040 केतु 26/10/2040 शुक्र 26/12/2040 सूर्य 13/01/2041 चंद्र 12/02/2041 मंगल 05/03/2041 राहु 28/04/2041 गुरु 16/06/2041 शनि 12/08/2041	केतु 21/08/2041 शुक्र 15/09/2041 सूर्य 22/09/2041 चंद्र 04/10/2041 मंगल 13/10/2041 राहु 04/11/2041 गुरु 24/11/2041 शनि 18/12/2041 बुध 08/01/2042	शुक्र 20/03/2042 सूर्य 10/04/2042 चंद्र 16/05/2042 मंगल 10/06/2042 राहु 13/08/2042 गुरु 09/10/2042 शनि 15/12/2042 बुध 13/02/2043 केतु 10/03/2043	सूर्य 17/03/2043 चंद्र 27/03/2043 मंगल 04/04/2043 राहु 23/04/2043 गुरु 10/05/2043 शनि 30/05/2043 बुध 17/06/2043 केतु 25/06/2043 शुक्र 16/07/2043
मंगल - चंद्र 16/07/2043 14/02/2044	राहु - राहु 14/02/2044 27/10/2046	राहु - गुरु 27/10/2046 22/03/2049	राहु - शनि 22/03/2049 27/01/2052	राहु - बुध 27/01/2052 15/08/2054
चंद्र 03/08/2043 मंगल 15/08/2043 राहु 16/09/2043 गुरु 15/10/2043 शनि 17/11/2043 बुध 18/12/2043 केतु 30/12/2043 शुक्र 03/02/2044 सूर्य 14/02/2044	राहु 11/07/2044 गुरु 20/11/2044 शनि 25/04/2045 बुध 11/09/2045 केतु 08/11/2045 शुक्र 21/04/2046 सूर्य 10/06/2046 चंद्र 31/08/2046 मंगल 27/10/2046	गुरु 21/02/2047 शनि 10/07/2047 बुध 11/11/2047 केतु 01/01/2048 शुक्र 26/05/2048 सूर्य 09/07/2048 चंद्र 20/09/2048 मंगल 10/11/2048 राहु 22/03/2049	शनि 03/09/2049 बुध 28/01/2050 केतु 30/03/2050 शुक्र 19/09/2050 सूर्य 10/11/2050 चंद्र 05/02/2051 मंगल 07/04/2051 राहु 10/09/2051 गुरु 27/01/2052	बुध 07/06/2052 केतु 31/07/2052 शुक्र 02/01/2053 सूर्य 18/02/2053 चंद्र 07/05/2053 मंगल 30/06/2053 राहु 17/11/2053 गुरु 21/03/2054 शनि 15/08/2054
राहु - केतु 15/08/2054 03/09/2055	राहु - शुक्र 03/09/2055 03/09/2058	राहु - सूर्य 03/09/2058 28/07/2059	राहु - चंद्र 28/07/2059 26/01/2061	राहु - मंगल 26/01/2061 14/02/2062
केतु 07/09/2054 शुक्र 10/11/2054 सूर्य 29/11/2054 चंद्र 31/12/2054 मंगल 22/01/2055 राहु 21/03/2055 गुरु 11/05/2055 शनि 10/07/2055 बुध 03/09/2055	शुक्र 03/03/2056 सूर्य 27/04/2056 चंद्र 27/07/2056 मंगल 29/09/2056 राहु 13/03/2057 गुरु 06/08/2057 शनि 26/01/2058 बुध 01/07/2058 केतु 03/09/2058	सूर्य 19/09/2058 चंद्र 16/10/2058 मंगल 05/11/2058 राहु 24/12/2058 गुरु 06/02/2059 शनि 30/03/2059 बुध 15/05/2059 केतु 03/06/2059 शुक्र 28/07/2059	चंद्र 12/09/2059 मंगल 14/10/2059 राहु 04/01/2060 गुरु 17/03/2060 शनि 12/06/2060 बुध 28/08/2060 केतु 29/09/2060 शुक्र 30/12/2060 सूर्य 26/01/2061	मंगल 17/02/2061 राहु 16/04/2061 गुरु 06/06/2061 शनि 06/08/2061 बुध 29/09/2061 केतु 22/10/2061 शुक्र 24/12/2061 सूर्य 13/01/2062 चंद्र 14/02/2062

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	6
भाग्यांक	3
मित्र अंक	3, 4, 6, 9
शत्रु अंक	1, 7, 8
शुभ वर्ष	24,33,42,51,60
शुभ दिन	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	मीन, मेष
मित्र लग्न	सिंह, मकर, मीन
अनुकूल देवता	शिव
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, ओपल
भाग्य रत्न	नीलम
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दूध



FUTUREPOINT
Astro Solutions

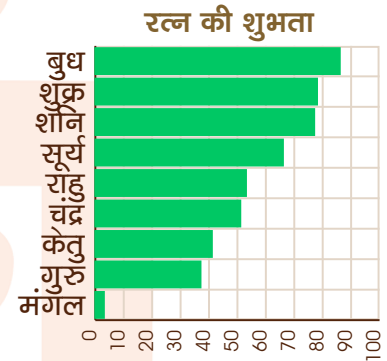


रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	86%	दम्पति, धन, सन्तति सुख
हीरा	शुक्र	78%	सन्तति सुख, स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति
नीलम	शनि	77%	पराक्रम, भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति
माणिक्य	सूर्य	66%	दम्पति, सुख
गोमेद	राहु	53%	शत्रु व रोग मुक्ति, सन्तति सुख
मोती	चंद्र	51%	पराक्रम
लहसुनिया	केतु	41%	व्यय, धन हानि
पुखराज	गुरु	37%	हानि, दुर्घटना
मूंगा	मंगल	3%	धन हानि, व्यय, दाम्पत्य कष्ट



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शनि	13/02/1977	53%	28%	0%	92%	37%	84%	89%	59%	16%
बुध	14/02/1994	72%	28%	3%	98%	37%	84%	77%	53%	41%
केतु	13/02/2001	53%	28%	16%	86%	37%	84%	64%	31%	58%
शुक्र	13/02/2021	53%	28%	3%	92%	37%	91%	83%	59%	52%
सूर्य	14/02/2027	78%	58%	16%	86%	49%	66%	64%	31%	16%
चंद्र	13/02/2037	72%	64%	3%	92%	37%	78%	77%	31%	16%
मंगल	14/02/2044	72%	58%	28%	73%	49%	78%	77%	31%	52%
राहु	14/02/2062	53%	28%	0%	86%	37%	84%	83%	66%	16%
गुरु	14/02/2078	72%	58%	16%	73%	56%	66%	77%	53%	41%



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	24/11/1975-07/09/1977	-----	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	07/09/1977-04/11/1979	15/03/1980-27/07/1980	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/10/1982-21/12/1984	01/06/1985-17/09/1985	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	05/03/1993-15/10/1993	10/11/1993-02/06/1995	10/08/1995-16/02/1996
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	23/07/2002-08/01/2003	07/04/2003-06/09/2004	13/01/2005-26/05/2005

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	01/11/2006-10/01/2007	16/07/2007-10/09/2009	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	15/11/2011-16/05/2012	04/08/2012-02/11/2014	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-----	-----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044
अष्टम स्थानस्थ ढैया	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया

फल

सम
अशुभ
शुभ
शुभ
सम

क्षेत्र

पराक्रम हानि
सुख हानि
शत्रु व रोग मुक्ति
व्यावसायिक उन्नति
धन



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

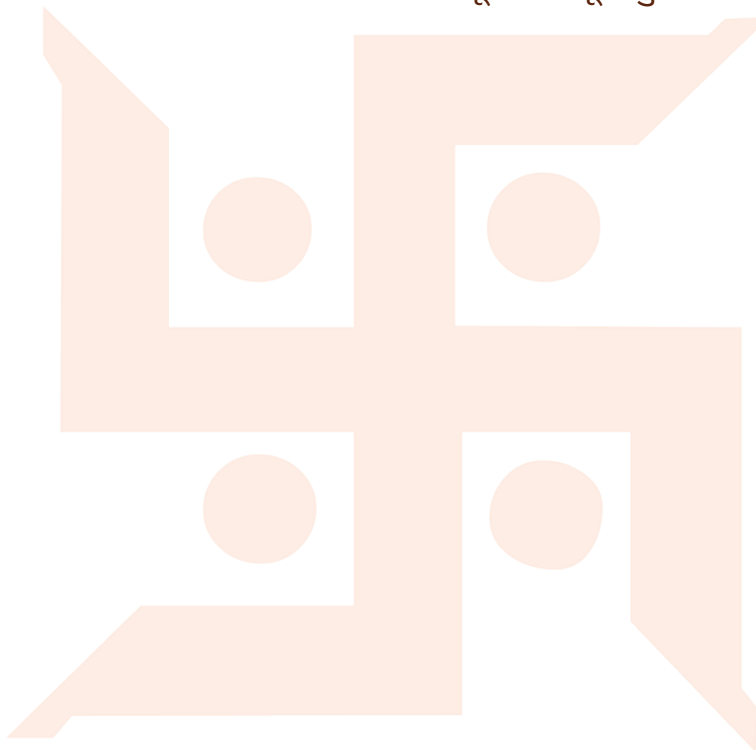
आपके जन्मकाल में मंगल की स्थिति चन्द्रकुंडली में द्वादश भाव में है अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं। चूंकि चन्द्र से मांगलिक होने का दोष अधिक प्रबल नहीं होता। अतः इसके प्रभाव से आपकी प्रवृत्ति किंचित व्ययशील रहेगी तथा शुभाशुभ कार्यों पर आप समय समय पर व्यय करते रहेंगे। जिससे आपको अल्प मात्रा में आर्थिक परेशानी हो सकती है लेकिन इसका प्रभाव अल्प रहेगा। तथा सामान्य रूप से धनार्जन होता रहेगा। शारीरिक स्वास्थ्य आपका मध्यम रहेगा। मानसिक परेशानी की अनुभूति आपको समय समय पर होती रहेगी। साथ ही सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में व्यवधान भी उत्पन्न होंगे लेकिन उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु स्वभाव में किंचित उग्रता का भाव हो सकता है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। आपका दाम्पत्य जीवन सुखी एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

मंगल के इस प्रभाव से आपके विवाह में किंचित विलम्ब हो सकता है परन्तु इस कार्य में सफलता आपको अवश्य प्राप्त होगा। साथ ही विवाह पूर्व किसी वार्ता में गतिरोध भी उत्पन्न हो सकता है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। विवाह के पश्चात आपका दाम्पत्य जीवन परस्पर सामंजस्य के कारण अनुकूल रहेगा तथा इसका उचित उपभोग करने में आप समर्थ रहेंगे।

चन्द्रकुंडली में मंगल की द्वादश स्थिति के प्रभाव से आपकी प्रवृत्ति व्ययशील होगी परन्तु प्रचुर मात्रा में धनार्जन होने के कारण इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा साथ ही सांसारिक कार्यों में उत्पन्न व्यवधानों तथा समस्याओं का सामना तथा समाधान करने में भी आप सफल होंगे। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि से भाई बहनों का सुख मध्यम रहेगा। पराक्रम तथा आत्मबल में वृद्धि होगी जिससे आपके लाभ एवं उन्नति के मार्ग हमेशा प्रशस्त रहेंगे। षष्ठ

भावस्थ मंगल की दृष्टि के प्रभाव से शत्रुवर्ग पर विजय प्राप्त करने में आपको सफलता मिलेगी। यदा कदा पित या गर्मी द्वारा उत्पन्न रोगों से आपको परेशानी का सामना करना पड़ेगा। सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से पत्नी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा स्वभाव में उग्रता भी रहेगी लेकिन परस्पर सामंजस्य के कारण आप सुखी दाम्पत्य जीवन का उपभोग करने में समर्थ रहेंगे।

इस प्रकार अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए। जिससे परस्पर मांगलिक दोष का प्रभाव समाप्त हो जाएगा। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक स्थानों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि या राहु सदृश पाप ग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। ऐसा होने पर आपके सुख एवं सौभाग्य में वृद्धि होगी तथा धन ऐश्वर्य से युक्त होकर आनन्द पूर्वक आप अपने दाम्पत्य जीवन का उपभोग करेंगे तथा एक दूसरे को पूर्ण सुख एवं सहयोग भी प्रदान करेंगे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृओं का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

आपकी कुण्डली में किसी भी प्रकार का पितृदोष विद्यमान नहीं है, अतः आपको जीवन में पितृदोष के कारण कष्ट या परेशानी नहीं होगी ।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं । यह सूर्यबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं । त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांड़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है । अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है ।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है । इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है । यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं ।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहाँ आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली वृष लग्न की हैं। वृषभ लग्न आपको आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामी बना रहा हैं। स्थिर लग्न होने से इनका स्वभाव स्थिरता लिये हुए होता है। आप जो भी कार्य करते हैं उसे पूरा करके ही हटते हैं। राशि चिह्न बैल होने की वजह से आप अत्यंत मेहनती हैं तथा लगातार कार्य करते रहना आपका व्यवहार हैं। प्यार से आप कुछ भी कर सकते हैं लेकिन जबरदस्ती करने पर आप बैल की भाँति अड़ियल हो जाते हैं, उस स्थिति में आपसे कुछ भी कराना मुश्किल होता है। पृथ्वी तत्व राशि होने से सहनशीलता का भाव आपमें कूट-कूट कर भरा है। जब तक आपसे सहन होता है, आप करते जाते हैं। योजनाबद्ध तरीके से कार्य करना आपको पसंद होता है। हर वस्तु को नियत स्थान पर रखना, हाथ में लिया गया प्रत्येक कार्य



FUTUREPOINT
Astro Solutions



पूर्ण करना, प्रत्येक सुन्दर वस्तु की ओर आप आसानी से आकर्षित हो जाते हैं।

त्रिक भावों के स्वामी अपने स्वामित्व के आधार पर स्वयं में अशुभता लिए होते हैं। 6,8,12 भावों को त्रिक भाव के नाम से जाना जाता है। इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता है। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

वृषभ लग्न में छठे भाव व लग्न भाव के स्वामी शुक्र हैं, शुक्र षष्ठेश होने पर स्वास्थ्य, ऋण के पक्ष से शुभ नहीं हैं। जीवन में प्रगति की राहों में बाधक बनता है। सतत प्रयासों के उपरान्त आप बाधाएं समाप्त करने में सफल रहेंगे।

अष्टम व एकादश भाव के गुरु हैं। इस भाव में बृहस्पति की स्व और मूल त्रिकोण धनु राशि हैं। बृहस्पति की राशि बाधक और गुप्त विषयों से सम्बंधित भाव में होना, आपको आर्थिक, वित्तीय और प्रबंधकीय विषयों में छोटी, धोखा और अप्रत्याशित हानि दे सकती हैं। जीवन की घटनाओं में शुभता के पक्ष से गुरु की धनु राशि इस भाव में आपके पक्ष में शुभ फल नहीं दे रही हैं।

द्वादश व सप्तम भाव के मंगल हैं। वृषभ लग्न के लिए मंगल विशेष अशुभ ग्रह होते हैं। आपके लग्न में मंगल की एक राशि सप्तम भाव तथा दूसरी द्वादश भाव में आती हैं। द्वादश भाव में मंगल की राशि मंगल के कारक तत्वों में कमी करती हैं। सप्तमेश मंगल दुर्घटनाओं, शल्यचिकित्सा, लड़ाई-झगड़ों के योग बना कर ऊर्जा शक्ति की हानि करा सकता है।

आपकी कुंडली में षष्ठ भाव में राहु तथा द्वादश भाव में केतु की स्थिति से आपका जीवन संघर्षमय हो सकता है। मगर इन संघर्षों में आपको विजय प्राप्त होगी। पराक्रम से शत्रुओं पर प्रभुत्व बना रहेगा। यह योग आप में मानसिक तनाव व दबाव सहने की क्षमता में वृद्धि कर रहा है।

केतु की स्थिति द्वादश भाव में शुभ नहीं मानी गयी है, इसके परिणाम से आप खचीले, चिंतित, प्रवासी, सनकी, चंचल बुद्धि, आपके अधिक व्यय धार्मिक कार्यों में होते हैं, आप इन्द्रियों पर विजय प्राप्ति का प्रयास कर सकते हैं। आपको जीवन लक्ष्य प्राप्ति के लिए जीवन भर संघर्ष करना पड़ सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 3, 5, 6, 8, 9 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए।
क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए
आवश्यक हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। सामान्यतया वृष लग्न में उत्पन्न जातक सुंदर उदार तथा सहिष्णु स्वभाव के होते हैं। उनकी वाणी में भी मधुरता का भाव विद्यमान रहता है। साथ ही व्यक्तित्व भी आकर्षक होता है तथा अन्य जनों को प्रभावित करने में वे समर्थ रहते हैं। शारीरिक रूप से उनका स्वास्थ्य अच्छा रहता है तथा मानसिक सन्तुष्टि भी उनकी बनी रहती है। ये अत्याधिक परिश्रमी जातक होते हैं तथा परिश्रम करने की उनकी अपूर्व क्षमता रहती है जिससे जीवन में उन्नति मार्ग प्रशस्त करने तथा सुखैश्वर्य एवं वैभव अर्जित करने में वे प्रायः सफल रहते हैं। शांति एवं सहिष्णुता के साथ इनमें साहस तथा पराक्रम का भाव भी विद्यमान रहता है।

अतः इसके प्रभाव से आपका व्यक्तित्व आकर्षक रहेगा तथा सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। अपने वाक्चातुर्य से शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यों को सिद्ध करने में भी सफल होंगे। आपका शारीरिक कद मध्यम होगा परन्तु स्वरूप सुंदर एवं आकर्षक होगा। आप में सहनशीलता का भाव भी विद्यमान होगा।

आप एक परिश्रमी पुरुष होंगे तथा अपनी योग्यता एवं परिश्रम से किसी उच्च पद या समाज में प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त करेंगे साथ ही अपने सदगुणों के द्वारा श्रेष्ठ जनों को सन्तुष्ट करने में सफल होंगे। आप एक विद्वान पुरुष होंगे तथा विभिन्न विषयों कला साहित्य एवं संगीत का आपको उचित ज्ञान रहेगा तथा इस क्षेत्र में प्रसिद्धि भी प्राप्त होगी।

लग्नेश शुक्र की राशि के प्रभाव से शारीरिक एवं मानसिक रूप से आप स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगे तथा उत्साह एवं परिश्रम पूर्वक अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगे। दानशीलता का भाव भी आप में विद्यमान होगा तथा समय समय पर जरूरतमन्दों को दान देने में तत्पर रहेंगे। आप एक बुद्धिमान पुरुष होंगे तथा आपके कार्य कलापों पर बुद्धिमता की स्पष्ट छाप होगी।

धर्म के प्रति आप श्रद्धालु रहेंगे तथा अवसरानुकूल धार्मिक अनुष्ठानों तथा कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगे। धार्मिक क्षेत्र में आप किसी संस्था से सम्बंधित हो सकते हैं या इस क्षेत्र में आपको कोई विशिष्ट सफलता या प्रतिष्ठा प्राप्त हो सकती है।

आप में उदारता तथा सहनशीलता का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा अवसरानुकूल आप समाज सेवा के लिए भी उद्यत रहेंगे। आपकी प्रवृत्ति सात्विक होगी तथा विचार भी उत्तम होंगे। साथ ही परोपकार की भावना भी विद्यमान होगी। इसके अतिरिक्त कई शास्त्रों का आपको ज्ञान होगा जिससे आपको सामाजिक मान प्रतिष्ठा तथा प्रसिद्धि प्राप्त होगी।

इस प्रकार आप स्वस्थ सुंदर आकर्षक व्यक्तित्व विद्वान एवं साहसी पुरुष होंगे तथा प्रसन्नतापूर्वक आपका जीवन व्यतीत होगा।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप की प्रवृत्ति धनसंग्रह करने की रहेगी तथा वर्तमान एवं भविष्य के लिए प्रचुर मात्रा में धन अर्जित करके उसका संग्रह करेंगे इससे आपकी आर्थिक स्थिति सन्तुलित रहेगी। साथ ही जायदाद या स्वर्ण आदि धातुओं पर पूंजीनिवेश करेंगे तथा इससे आपको प्रचुर मात्रा में लाभ प्राप्त होगा। आपका पारिवारिक जीवन सुख एवं शान्ति से युक्त रहेगा तथा उनकी खुशहाली के लिए आप सदैव प्रयत्नशील रहेंगे तथा पारिवारिक जनों से आपको पूर्ण सहयोग भी प्राप्त होता रहेगा।

सामान्यतया आपको सभी स्वाद रुचिकर लगेंगे परन्तु मिष्ठान के प्रति विशेष रुचिशीलता का प्रदर्शन करेंगे। चूंकि यह भाव वाणी का प्रतिनिधित्व करता है तथा इसका स्वामी बुध होने के कारण आपकी वाणी मृदु तथा प्रभाव शाली रहेगी तथा अन्य जनों को अपनी वाणी से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही विचारों की अभिव्यक्ति भी कुशलता पूर्वक करेंगे परन्तु अवसरानुकूल आप अपने विचारों में परिवर्तन भी कर सकते हैं। यदि आप यह अनुभव करते हैं कि इस समय के लिए यह विचार ठीक नहीं है। आतिथ्य सत्कार की भावना भी आपके मन में विद्यमान रहेगी। इसके अतिरिक्त स्त्री वर्ग से आपको उचित लाभ समय समय पर मिलता रहेगा तथा वाहन एवं बहुमूल्य रत्नों की भी प्राप्ति होगी। इसके साथ ही धार्मिक एवं सज्जन प्रवृत्ति के लोगों से आप सामान्यतया मित्रता करना पसन्द करेंगे।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। अतः इसके प्रभाव से आप जीवन में समस्त भौतिक सुख संसाधनों एवं आधुनिक विलासमय वस्तुओं से युक्त होंगे तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करने में समर्थ होंगे। शुक्र के प्रभाव से युवावस्था से ही आपको सुख-संसाधनों की उपलब्धि हो जायेगी तथा इसके लिए विशेष परिश्रम भी कम ही करना पड़ेगा।

जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को आप अवश्य प्राप्त करेंगे। आपके प्रचुर मात्रा में धन सम्पत्ति की प्राप्ति होगी तथा विवाह के बाद इसमें काफी वृद्धि होगी। स्त्री के सहयोग से भी धनाढ्य एवं समृद्धशाली व्यक्ति माने जायेंगे। चल सम्पत्ति की उपेक्षा अचल सम्पत्ति की आपके पास बहुलता होगी जिससे जमीन जायदाद तथा मकान प्रमुख होंगे। साथ ही समस्त आधुनिक भौतिक एवं विलासमय उपकरणों से आप सम्पन्न होंगे तथा आनंदपूर्वक इनका उपभोग करेंगे।

उत्तम निवास स्थान के विषय में आप सौभाग्यशाली व्यक्ति समझे जायेंगे। आपका घर उत्तम एवं आधुनिक स्थान में होगा तथा सर्व प्रकार से यह आकर्षक एवं सुसज्जित रहेगा। आप भी इसकी सुन्दरता एवं सफाई का पूर्ण ध्यान रखेंगे। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा एवं पड़ोसी भी बुद्धिमान एवं शिक्षित होंगे तथा आपसी संबंध अच्छे रहेंगे। आपकी कुंडली में उत्तम वाहन के भी योग बनते हैं जिसका आप युवावस्था से ही उपयोग करके प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे।

आपकी माता जी सुन्दर सुसंस्कृत एवं मृदुस्वभाव की महिला होंगी तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। वह एक चतुर एवं बुद्धिमान महिला होंगी तथा अपनी चतुराई एवं व्यवहार कुशलता से परिवार का अच्छी तरह पालन पोषण करेंगी एवं किसी भी व्यक्ति को उनसे कोई परेशानी नहीं होगी। आपके प्रति उनके हृदय में विशेष वात्सल्य एवं स्नेह का भाव होगा तथा अवसरानुकूल उनसे आपको प्रचुर मात्रा में आर्थिक सहयोग की भी प्राप्ति होती रहेगी। आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव रखेंगे तथा उनकी आज्ञा का पालन करने में तत्पर होंगे। इसके अतिरिक्त सुख-दुख में उनको अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। इस प्रकार आपसी संबंध भी मधुर होंगे।

अध्ययन के प्रति वचन से ही आपकी रुचि होगी तथा बुद्धिमान एवं परिश्रमशील होने के कारण प्रारंभ से ही अध्ययन के क्षेत्र में अनावश्यक समस्याओं एवं बाधाओं का सामना नहीं करना पड़ेगा। इसी परिपेक्ष्य में आप स्नातक परीक्षा आसानी से उत्तीर्ण करेंगे तथा इससे आप की आत्मिक शक्ति में वृद्धि होगी फलतः जीवन में इच्छित उन्नति एवं सफलता अर्जित करने में समर्थ होंगे। सामाजिक जनों एवं संबंधियों में भी आपके सम्मान में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपसे प्रसन्न एवं प्रभावित होंगे। इससे आपको प्रोत्साहन मिलेगा जिससे भविष्य उज्ज्वल होगा।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है तथा शुक्र भी लग्नेश होकर पंचमभाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा आपके सांसारिक एवं अन्य कार्य कलाओं पर बुद्धिमता की स्पष्ट छाप होगी जिससे सभी लोग आपसे प्रभावित होंगे। आप कठिन से कठिन कार्य को आसानी से पूर्ण करने में भी समर्थ होंगे। यद्यपि वैदिक धर्म एवं दर्शन शास्त्रों में आपकी रुचि अल्प होगी परंतु आधुनिक साहित्य कविता एवं कला में आप पूर्ण रुचि रखेंगे। पाश्चात्य कला, संगीत एवं साहित्य के विशेष प्रेमी होंगे तथा इन क्षेत्रों में आप अपनी बुद्धिमता, योग्यता एवं परिश्रम से ज्ञान अर्जित करके समाज में अपने प्रभुत्व को स्थापित करने में समर्थ होंगे। फलतः आपका सम्मान एवं विद्वता का प्रभाव समाज में बना रहेगा।

शुक्र की नीचस्थ स्थिति की पंचमभाव में स्थिति के प्रभाव से प्रेम प्रसंगों में आप अधिक लिप्त रहेंगे तथा अधिकांश प्रसंग आप मनोरंजन या मानसिक सन्तुष्टि के लिए स्थापित करेंगे। आपके प्रेम प्रसंग में आदर्श, यथार्थवाद एवं मर्यादा की भी कमी होगी। फलतः ऐसे क्षेत्र में आप अपने लिए अनावश्यक परेशानियां एवं अशान्ति उत्पन्न कर सकते हैं तथा वैवाहिक जीवन पर भी दुष्प्रभाव हो सकता है। अतः ऐसे प्रसंगों की यत्नपूर्वक उपेक्षा ही करनी चाहिए तभी आप सुखी रह सकते हैं।

पंचमभाव में नीचस्थ शुक्र की स्थिति से सन्तति में विलम्ब एवं व्यवधानों का सामना करना पड़ सकता है परंतु विलम्ब से ही सही संतति की प्राप्ति अवश्य होगी। आपकी संतति बुद्धिमान एवं गुणवान होगी परंतु वे सभी हठी एवं अभिमानी प्रवृत्ति के होंगे। माता पिता का कहना भी कम ही मानेंगे एवं एक दूसरे के प्रति श्रद्धा एवं सम्मान का भाव भी अल्प ही होगा। लेकिन इससे आपको चिन्तित नहीं होना चाहिए। क्योंकि वे व्यावहारिक बुद्धि के स्वामी होंगे फलतः जीविकार्जन एवं आर्थिक दृष्टि से सुदृढ़ रहेंगे। सुख में न सही लेकिन दुख में माता पिता का अवश्य ध्यान रखेंगे जिससे आपको किंचित मात्रा में मानसिक शान्ति की प्राप्ति होगी परंतु संतति पक्ष से आपको अधिक अपेक्षाएं नहीं रखनी चाहिए।

अध्ययन के प्रति बच्चों की रुचि सामान्य होगी तथापि परिश्रम पूर्वक वे वांछित शिक्षा अर्जित करने में समर्थ होंगे। यद्यपि किसी मान्यता प्राप्त प्रशासनिक या अन्य क्षेत्रों में वे परिश्रम एवं पराक्रम से ही प्रवेश कर रखेंगे परंतु वाणिज्य क्षेत्र में योग्य सिद्ध होंगे तथा इसी से अपने जीवन में ऐश्वर्य एवं वैभव अर्जित करेंगे। अतः इनके लिए आपको अधिक चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथापि अपने लिए आपको पूर्ण धन संचय करके रखना चाहिए जेकि आपके सुख दुख के समय काम आएगा तथा बच्चों को स्वावलंबी छोड़ देना चाहिए एवं उनके कार्यों में दखल नहीं देना चाहिए। इससे आप तथा वे शान्ति एवं सन्तुष्टि अनुभूति करेंगे।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है तथा सूर्य भी सप्तम भाव में ही स्थित है। वृश्चिक राशि की सप्तम भाव में स्थिति से जातक का सहयोगी व्ययशील प्रवृत्ति वाला पित प्रकृति एवं धर्म के प्रति अल्प श्रद्धा वाला होता है। साथ ही सूर्य जैसे तेजस्वी ग्रह के प्रभाव से उसमें तेजस्विता साहस एवं पराक्रम का भाव भी विद्यमान रहता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी तेजस्वी साहसी एवं पराक्रमी होगी। वह एक शिक्षित एवं बुद्धिमती महिला होगी तथा अपने सांसारिक कार्य कलापों को दक्षता पूर्वक सम्पन्न करेंगी। साहित्य एवं कला के प्रति भी उनकी रुचि रहेगी एवं सूर्य के प्रभाव से कर्तव्य परायणता का भाव भी विद्यमान रहेगा जिससे परिवार एवं समाज के प्रति ईमानदारी से अपने कर्तव्य का पालन करेंगी लेकिन स्वाभिमान प्रवृत्ति होने के कारण सहिष्णुता के भाव की कमी रहेगी।

आपकी पत्नी सामान्य गौरवर्ण की महिला होंगी तथा उनका कद भी मध्यम रहेगा। शारीरिक संरचना की दृष्टि से वह पुष्ट एवं आकर्षक रहेंगी तथा अंगों की सुडौलता दर्शनीय होगी। सौन्दर्य में वृद्धि के लिए वह सौन्दर्य प्रसाधनों का भी उपयोग करेंगी। उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा तथा अन्य लोग उनसे प्रभावित होंगे। भौतिकता के प्रति उनके मन में प्रबल आकर्षण रहेगा एवं समयानुसार इन पर मुक्त भाव से व्यय करके इनका संग्रह करेंगी।

आप अपनी इच्छा से ही विवाह करेंगे तथा अन्य जनों से कोई सलाह नहीं लेंगे इसकी परिणति प्रेम विवाह के रूप में भी हो सकती है। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा तथा संबंधों में भी मधुरता बनी रहेगी परन्तु सूर्य के प्रभाव से पत्नी के स्वभाव में तेजी रहेगी एवं स्वाभिमान तथा असहिष्णुता की प्रवृत्ति के कारण अल्प समय के लिए इसमें तनाव की अनुभूति हो सकती है परन्तु आप अपनी बुद्धिमता से सांमजस्य स्थापित करने में समर्थ होंगे।

आपका विवाह सामान्य परिवार में होगा तथा उनकी आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति भी साधारण होगी जिससे विवाह के समय आपको ससुराल से कोई सूर्य की स्थिति मित्र राशि में होने के कारण सास ससुर से आपके संबंधों में अनुकूलता होगी तथा सामान्य मधुर संबंध स्थापित करने में समर्थ रहेंगे एवं विशेष अवसरों पर मिलाप होता रहेगा।

आपकी पत्नी का भी सास ससुर के प्रति सेवा एवं सम्मान का भाव मध्यम रहेगा तथा सुख दुःख में उनका यथोचित ध्यान नहीं रखेंगी। देवर एवं ननद भी उनके तेजस्वभाव के कारण असन्तुष्ट रहेंगे तथा उन्हें यथोचित मान सम्मान प्रदान नहीं करेंगे फलतः पारिवारिक सुख शांति में कमी आएगी।

व्यापार में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल नहीं रहेगी तथा इसमें हानि की संभावना होगी परन्तु यदि अत्यावश्यक हो तो सोच समझकर किसी विश्वसनीय मित्र के साथ साझेदारी भी बन सकती है। इससे लाभमार्ग प्रशस्त होंगे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। कुम्भ राशि वायुतत्व युक्त है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्य क्षेत्र निरंतर उन्नतिशील रहेगा एवं किसी भी प्रकार की अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा। साथ ही इच्छित उन्नति एवं सफलता भी मिलती रहेगी।

दशम भाव में कुंभ राशि का स्वामी शनि है। अतः इसके शुभ प्रभाव से आपकी आजीविका उत्तम रहेगी। आपके लिए वायुसेना, एयर लाइंस, खनिज एवं खान विभाग, पेट्रोलियम उद्योगों में भागीदारी, फैक्टरी कर्मचारी, संदेशवाहक तथा राजनीति के क्षेत्र में विशिष्ट सफलता मिल सकती है। अतः यदि आप अपनी आजीविका इन्हीं क्षेत्रों में प्रारंभ करें तो इनमें आपको वांछित उन्नति एवं सफलता प्राप्त होगी तथा उन्नति के शिखर पर पहुँचने में आप समर्थ होंगे। साथ ही राजनीति आपके लिए काफी अनुकूल होगी तथा इस क्षेत्र में अल्प समय में ही आप काफी उन्नति करने में समर्थ हो सकते हैं। अतः आजीविका में वांछित सफलता एवं नवीन आयाम स्थापित करने के लिए आपको उपरोक्त क्षेत्रों या विभागों में ही अपना कार्य क्षेत्र निश्चित करना चाहिए।

व्यापारिक क्षेत्र में लोहे के व्यापार से विशिष्ट लाभ प्राप्त करेंगे। इसके साथ ही भारी उद्योग, फैक्टरी, पेट्रोल पम्प, शराब का व्यापार प्रेस, खेती, बागवानी, आदि के कार्यों से प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में समर्थ होंगे तथा जीवन में विशिष्ट उन्नति तथा लाभ अर्जित करेंगे। अतः आपको चाहिए कि यत्नपूर्वक इन्हीं क्षेत्रों में अपने व्यापार का शुभारम्भ करें।

योगकारक ग्रह की राशि के प्रभाव से जीवन में आप उच्च मान सम्मान एवं पद अर्जित करने में समर्थ होंगे। समाज में आपको प्रचुर मात्रा में यश तथा प्रतिष्ठा की भी प्राप्ति होगी। आपका सम्पर्क अधिकारी एवं राजनैतिक नेताओं से बने रहेंगे जिससे सर्वत्र प्रभावशाली माने जाएंगे। साथ ही सामाजिक या सार्वजनिक संस्थाओं में भी आप उच्चपदाधिकारी के रूप में कार्यरत होंगे इनसे आपकी सामाजिक मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा यश एवं प्रसिद्धि भी मिलेगी तथा आपका सामाजिक स्तर भी उच्च होगा।

आपके पिता तेजस्वी बुद्धिमान योग्य एवं पराक्रमी पुरुष होंगे तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा फलतः अन्य जन उनके कार्यकलापों से प्रभावित रहेंगे। आपके प्रति उनका विशेष स्नेह एवं वात्सल्य का भाव होगा तथा शिक्षा दीक्षा का समुचित ध्यान रखेंगे साथ ही आपके कार्यक्षेत्र में उन्नति में उनका विशेष योगदान रहेगा एवं उनके प्रभाव से भी आपको प्रचुर मात्रा में लाभ उन्नति एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। आपकी भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना होगी तथा उनकी आज्ञा पालन करना अपना प्रिय कर्तव्य समझेंगे। इसके अतिरिक्त परस्पर सिद्धांतों एवं वैचारिक एकता होने के कारण संबंधों में भी मधुरता रहेगी।

वार्षिक फलादेश - 2025

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि दशम भाव में रहेंगे व मीनस्थ राहु एकादश भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि एकादश भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि दशम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि का गुरु लग्न स्थान में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि द्वितीय भाव में प्रवेश करेगी और अतिचारी होकर 18 अक्टूबर को कर्क राशि तृतीय स्थान में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि द्वितीय भाव में आ जाएगी।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत उत्तम रहेगा। वर्षारम्भ में सप्तम भाव पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप व्यवसाय व कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे जिससे आपकी आय में वृद्धि होगी। आमदनी के नये स्रोत मिलने की उम्मीद है। कोई नया व्यापार शुरू करने के लिए अच्छा समय है। लग्न स्थान का गुरु नवीन विचार धारा तथा नयी योजनाओं को जन्म देगा जिसका उचित लाभ उठा कर आप अपने व्यापार को और सुदृढ़ बना सकते हैं।

आपका भाग्य भी आपके साथ है। इसलिए कम समय में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। साझेदारी या शेयर बजार में आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति हो सकती है। मई के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष अत्यधिक अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में वृद्धि होगी। एकादश स्थान के राहु अचानक धन लाभ कराते रहेंगे। आपको बड़े भाईयों से लाभ प्राप्त होता रहेगा। मई के बाद आपको रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। आपके रुके हुए पैसे मिल सकते हैं। आप बचत करने में सफल रहेंगे।

मांगलिक कार्यों में आप खुले हाथों से खर्च करेंगे। निवेश के मामले में यह वर्ष अनुकूल रहेगा, और आप अच्छा निवेश भी करेंगे। अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें। 14 मई के बाद अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से धन लाभ हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में सप्तम भाव पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पत्नी के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी, जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा।

मई के बाद परिवार में सदस्य संख्या में बढ़ोत्तरी हो सकती है। आपको बड़े भाईयों

का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा, जिससे समाज में आपके पराक्रम व प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। 30 मई के बाद चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी माता का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध बहुत अच्छा रहेगा और आपको उनका सहयोग भी प्राप्त होता रहेगा।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का उपयुक्त समय है।

यदि आपकी सन्तान विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है। आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय काफी अनुकूल है। उनको अपने कार्य क्षेत्र में अच्छी सफलता प्राप्त होगी। आपके बच्चे इतने कामयाब होंगे कि आपको उन पर गर्व होगा।

स्वास्थ्य

लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। आपके मन में हमेशा अच्छे विचार आएंगे। जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे। प्रत्येक कार्य को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आप खान-पान पर विशेष ध्यान देंगे एवं अपनी दिनचर्या भी अनुशासित रखेंगे।

यदि मौसम जनित कोई बीमारी होती है तो शीघ्र ही आप अच्छे हो जाएंगे। गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय और अच्छा हो रहा है। उस समय आपको मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता प्राप्त होगी और आप पूर्ण रूप से स्वस्थ रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से अनुकूल है। यदि शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो आपके लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल है। पंचम स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा है।

14 मई के बाद प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्त होगी। जिन जातकों की नौकरी अभी तक नहीं लगी है, मई के बाद उन लोगों को नौकरी मिल सकती है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्रा होगी।

द्वादश स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। मई के बाद आप जलीय क्षेत्रों की यात्रा करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। आप पूजा पाठ, यज्ञ एवं अनुष्ठान करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से ईश्वर के प्रति आपका अटूट विश्वास होगा। आप गुरु मन्त्र लेकर साधना कर सकते हैं। दान पुण्य करने में आप सबसे आगे रहेंगे।

- स्फटिक श्रीयन्त्र अपने घर में स्थापित कर उसके सामने नित्य घी का दीपक जलाएं।
- अपने मन को केन्द्रित करने के लिए ध्यान करें एवं नित्य प्रणायाम करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि एकादश भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु दशम भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमें नवम भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु द्वितीय भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमें तृतीय भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें चतुर्थ भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बहुत उत्तम रहेगा। आप अपनी कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर अपने व्यवसाय में बेहतरसफलता प्राप्त करेंगे। आपकी सफलता में आपको भाइयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। बड़े अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा जिसका उचित लाभ उठाकर आप अपने व्यापार में कुछ नया करेंगे और आपको अच्छा लाभ होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने कार्यस्थल पर मान-सम्मान मिलेगा व अपने अधिकारियों की अनुकूलता प्राप्त होगी।

02 जून के बाद एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको अपने कार्य क्षेत्र में बहुत अच्छा लाभ होगा। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो उसमें भी इच्छित लाभ प्राप्त होगा। भूमि से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को 31 अक्टूबर के बाद अच्छा लाभ मिलेगा। इस समय के अंतराल में इच्छित स्थान पर आपका स्थानान्तरण भी हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत उत्तम रहेगा। आपके धनागम में वृद्धि होगी जिससे आप इच्छित बचत करके आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बना सकते हैं। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपको रत्न आभूषण इत्यादि का भी सुख प्राप्त होगा। अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पैतृक सम्पत्ति, या ससुराल से धन प्राप्त होने का प्रबल योग बन रहे हैं।

02 जून के बाद एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी आय के स्रोतों में बढोत्तरी होगी। इस समय अंतराल में आपको अचानक धन लाभ होगा। 31 अक्टूबर के बाद भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख भी प्राप्त हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। वर्षारम्भ में द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। परिवार में एक दूसरे के प्रति समर्पण की भावना बनने के कारण सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको भाइयों का



FUTUREPOINT
Astro Solutions



पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। चतुर्थ स्थान का केतु आपके पारिवारिक माहौल को भंग करने की कोशिश करेगा, परन्तु आप अपने बुद्धि-विवेक से उसे भी अनुकूल कर लेंगे।

02 जून के बाद आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में बढ़ चढ़ के भाग लेंगे और सामाजिक उत्थान के लिए आप किसी संस्था का संचालन भी कर सकते हैं। समाज में आपका अपना एक अलग व्यक्तित्व होगा। 31 अक्टूबर के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है उस समय आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण छा जाएगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल है। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। संतान के इच्छुक व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का शुभ समय चल रहा है।

02 जून से आपकी दूसरी संतान के लिए समय शुभ हो रहा है। यदि आप का दुसरा बच्चा विवाह के योग्य है। तो विवाह हो जाएगा। इस समय के अंतराल में आपके बच्चों के साथ आपका भावनात्मक लगाव बढ़ेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। आपकी शारीरिक ऊर्जा व कार्य क्षमता में वृद्धि होगी। पूर्ण रूप से शारीरिक आरोग्यता बनी रहेगी। शारीरिक अनुकूलता बनाये रखने के लिए आप संतुलित आहार एवं नियमित व्यायाम करते रहेंगे। गुरु ग्रह की अनुकूलता के कारण शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। आपके अंदर अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आप छोटी-मोटी बीमारियों के कारण परेशान हो सकते हैं। लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि आलस्य की भावना उत्पन्न कर सकती है। उस समय आपको परहेज की ज्यादा जरूरत होगी। खान-पान के साथ साथ आपको अपनी दिनचर्या पर विशेष ध्यान देना चाहिए। सुबह सुबह व्यायाम के साथ योगाभ्यास भी करना चाहिए। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली को बेहतर बनाने की कोशिश करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा, षष्ठ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप प्रतियोगिता परीक्षा में सबसे आगे रहेंगे। कुछ अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में सुधार लाएंगे, सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपको कार्यों में लाभ प्राप्त हो सकता है।

02 जून के बाद तकनीकी शिक्षा या व्यवसाय के लिए समय अच्छा हो रहा है। शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की संभावना बन रही है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में कोई विशेष यात्रा का योग नहीं बन रहा है, परन्तु 02 जून के बाद तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। धार्मिक यात्रा के लिए भी समय काफी अच्छा है।

31 अक्टूबर के बाद आप परिवार के साथ अपनी जन्म भूमि की यात्रा करेंगे या पर्यटन स्थल व दार्शनिक स्थलों की यात्रा कर आनन्द प्राप्त करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शान्ति

धार्मिक कार्य के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। ईश्वर के प्रति आपके मन में अटूट विश्वास बना रहेगा। 2 जून के बाद नवम स्थान पर गुरुके दृष्टि प्रभाव से आप कोई विशेष पूजा-पाठ यज्ञ, अनुष्ठान संपन्न करेंगे। धार्मिक कार्य, गरीबों को दान एवं तीर्थ यात्रा कर अत्यधिक पुण्यार्जन भी करेंगे, जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं आत्मिक सुख की अनुभूति होगी। 31 अक्टूबर के बाद अपने परिवार में सुख शान्ति या समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन व कोई धार्मिक कार्य भी संपन्न करेंगे।

- स्फटिक श्रीयन्त्र घर में स्थापित करें एवं उसके सामने नित्य दीपक जलाएं।
- बुधवार के दिन गणेश जी को दूर्वा चढ़ाएं एवं ॐ गं गणपतये नमः इस मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीस का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि एकादश भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं एकादश भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष नवम भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध शुभ फलदायी रहेगा। शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके कार्य व्यवसाय में अनुकूलता बनी रहेगा। बड़े अधिकारी या अनुभवी लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। व्यवसाय में कुछ विशेष वनया करने के अवसर भी मिलते रहेंगे परन्तु इस समय के अंतराल में व्यापार में विस्तार न करें। जितना आपसे हो सके उतना ही कार्य करें नहीं तो वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपसे नुकसान हो सकता है। गुरु ग्रह के गोचर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ-साथ स्थान परिवर्तन भी हो सकता है।

03 जून के बाद शनि ग्रह का गोचर द्वादश भाव में हो रहा है। उस समय आपका कार्य व्यवसाय कुछ प्रभावित हो सकता है। आपके प्रतिद्वंदी आपका विरोध कर सकते हैं या शत्रुओं द्वारा आपके कार्य में रुकावट डालने की चेष्टा की जा सकती है। अतः बिना किसी पर विश्वास किये आत्मविश्वास के साथ कार्य करते रहें, क्योंकि 03 अक्टूबर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। उस समय आपके सारे विरोधी शान्त होंगे और आपको कार्य-व्यवसाय में सफलता भी मिलेगी।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष अच्छा रहेगा। एकादश स्थान केशनि धनागम में निरंतरता बनाए रखेंगे। व्यापारिक अनुकूलता के कारण आपकी आर्थिक स्थिति में वृद्धि हो सकती है। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। धनादि संचित करने में आपको भाईयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। निवेश के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध शुभ रहेगा। मांगलिक कार्यों में या समाजिक कार्यों में भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

03 जून से 03 अक्टूबर के मध्य समय किंचित प्रभावित हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में कोई बड़ा निवेश न करें या किसी को उधार पैसे न दें। कोई आर्थिक निर्णय लेने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है। 03 अक्टूबर के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। उस समय भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होगा। वर्षान्त में गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में होगा, जिसके प्रभाव

से सट्टा लॉटरी या शेयर बजार से भी आप को धन लाभ हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

सामाजिक दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। तृतीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ कर भाग लेंगे। पारिवारिक रूप से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा।

26 जून से चतुर्थ स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका घरेलू वातावरण अनुकूल रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा। ससुराल पक्ष से संबंध मधुर होंगे। 26 नवम्बर के बाद संतान पक्ष के लिए समय काफी अनुकूल हो रहा है।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान पर शनि एवं राहु ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। उनकी शिक्षा-दीक्षा में भी व्यवधान आ सकता है। सन्तान का लक्ष्य प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम भी मनचाहा परिणाम नहीं देगा परन्तु आपके दूसरे बच्चे के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा है। यदि वह विवाह के योग्य हैं तो विवाह निश्चित है।

जून के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। उस समय आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। 26 नवम्बर के बाद गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में हो रहा है। संतान इच्छित दम्पतियों के लिए गर्भाधान का शुभसमय है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत हैं। मानसिक शांति, प्रसन्नता एवं सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा परन्तु शनि ग्रह के गोचर के बाद आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है।

03 जून के बाद द्वादश स्थान में शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आप बीमार हो सकते हैं। सुबह जल्दी उठ कर घूमना या व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। 26 नवम्बर के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी, जिससे आपकी स्वास्थ्य संबंधित परेशानी दूर हो जाएंगी और आप पूर्ण रूप से स्वस्थ रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा रहेगा। आप प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करेंगे। इन्जीनीयरिंग या हार्डवेयर से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिए यह समय श्रेष्ठ है।

जून के बाद विद्यार्थियों का शिक्षा के प्रति रुझान बढ़ेगा। द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर अपने करियर में उन्नति करेंगे। 26 नवम्बर के बाद पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अच्छा है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के पूर्वार्द्ध में तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से छोटी यात्राओं के साथ-साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। नवमस्थ राहु के प्रभाव से आपकी अधिकांश यात्रा अचानक होंगी। पूर्व से निधारित यात्रा प्रायः निरस्त होंगी।

26जून के बाद अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा हो सकती है। द्वादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अनुकूल है। वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप पूजा पाठ में विशेष रुचि लेंगे। नियमित रूप से अपनी दैनिक पूजा करते रहेंगे। जून के बाद द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आप दान पुण्य अधिक करेंगे। अष्टम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से तन्त्र, यन्त्र एवं मन्त्र के प्रति आप का विश्वास बढ़ेगा और चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से घरेलू सुख, शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन, ग्रह शान्ति या अन्य कोई पूजा संपन्न करेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें। (तांबे के लोटे में चावल डाल कर)
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें और शनि मन्त्र का पाठ करें।
- संध्या के समय पीपल वृक्ष के नीचे चौमुखी दीपक जलाएं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि एकादश भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरु में मकर राशि एवं नवम भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु पंचम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारंभ व्यावसायिक उन्नति के साथ होगा। कोई नया कार्य आरम्भ करेंगे और उसमें आपको सफलता भी मिलेगी। उच्च अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगा साथ ही किसी बड़ी कंपनी के साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति भी हो सकती है। 28 फरवरी से 24 जुलाई तक समय प्रतिकूल हो रहा है। गुप्तशत्रु या विरोधियों द्वारा आपके कार्यों में व्यवधान डाला जा सकता है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आप अपनी कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर व्यावसायिक जीवन की समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में अपने कर्मचारियों पर निगाह रखें।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष के प्रारम्भ में धनागम के स्रोतों में वृद्धि होगी। नये व्यापार से भी शीघ्र लाभ होने के योग हैं। साथ ही फंसे हुए धन या रुके हुए धन की प्राप्ति हो सकती है। धार्मिक यात्रा या मांगलिक कार्यों में धन व्यय करेंगे। फरवरी से जून तक समय कुछ प्रभावित रहेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में कुछ खर्च से आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। ऋण इत्यादि भी बढ़ सकता है। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा बनाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाएं। गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण सामान्य काम काज पर असर नहीं होगा। परन्तु आर्थिक कमी महसूस होती रहेगी। मांगलिक कार्य व पुत्रादि के विवाह अवसर पर भी धन का व्यय हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। यदि आप विवाह योग्य हैं तो विवाह होने की सम्भावना है। प्रेम संबंधों में मधुरता बढ़ेगी। भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा। 28 फरवरी के बाद मातुल पक्ष के साथ वैचारिक मतभेद हो सकता है। माता के लिए समय शुभ रहेगा परन्तु पिता के लिए यह समय अच्छा नहीं रहेगा। पिता के स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

24 जुलाई के बाद समय अच्छा हो रहा है। नवविवाहिताओं को संतान की प्राप्ति हो

सकती है। पारिवारिक वातावरण अनुकूल बना रहेगा। यह समय बड़े भाई तथा मित्रों से लाभ का योग बना रहा है। घर के वातावरण में प्रेम, आपसी समन्वय व प्रसन्नता का संचार होगा। सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि के संकेत हैं।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। वे अपनी बुद्धि एवं विवेक के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। संतान की इच्छा रखने वाली महिलाओं के लिए गर्भ धारण का अच्छा समय है। परन्तु 28 फरवरी से 24 जुलाई तक समय प्रभावित रहेगा। ये समय आपके संतान की तरक्की में बाधक हो सकता है। दूसरी संतान के लिए समय सामान्य रहेगा।

जुलाई के बाद आपके बच्चों के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रगति होने के शुभ योग बनेंगे। उनके पराक्रम में भी वृद्धि होगी। आपको अपने बच्चों पर अभिमान होगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अतिउत्तम रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता बनी रहेगी। आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। 23 फरवरी के बाद शनि का गोचर प्रतिकूल होने के कारण मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान हो सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में शनि एवं राहु का गोचर एक साथ प्रतिकूल होने के कारण स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। पंचमस्थ गुरु शारीरिक आरोग्यता अनुकूल रखने का पूर्ण प्रयास करेंगे फिर भी चोट या दुर्घटना की स्थिति बन सकती है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ रहेगा। परन्तु 23 फरवरी के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध बहुत अच्छा नहीं रहेगा। शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण करियर व प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। व्यावसायिक रूप से भी समय अच्छा नहीं रहेगा।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकी यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी साथ ही नवमस्थ राहु पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से अचानक आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। 23 फरवरी के बाद विदेश यात्रा का भी योग बन रहा है। फरवरी के बाद चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से मनोवांछित स्थान पर स्थानांतरण होने के योग बन रहे हैं। आप अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे अथवा माता के निवास स्थल का भ्रमण करेंगे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वर्ष के उत्तरार्द्ध में यात्रा के दौरान आपको छोटी-मोटी परेशानियों का भी सामना करना पड़ सकता है क्योंकि राहु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से पूजा-पाठ यज्ञ अनुष्ठान व मन्त्र जाप के प्रति रुचि बढ़ेगी। फरवरी के बाद पारिवारिक सुख शान्ति के लिए भी आप अपने घर में हवन व कोई धार्मिक कार्य संपन्न करेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप गुरु मन्त्र लेकर साधना भी कर सकते हैं। आप अपने से बड़े लोगों का सम्मान करेंगे।

- शनि मन्त्र का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का या काले कम्बल मजदूरों या गरीबों को दान करें।
- बुधवार या शनिवार के दिन चिड़ियों को दाना डालें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि द्वादश भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु अष्टम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु छठे भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गि होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं छठे भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में कार्य व्यवसाय की स्थिति अच्छी नहीं रहेगी। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए अत्यधिक परिश्रम करना पड़ेगा। शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यवसाय में हानि भी हो सकती है। अतः इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। द्वादशस्थ शनि के कारण आलस्य की भावना बनी रहेगी। गुप्त शत्रु एवं प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। अष्टम स्थान का राहु अचानक आपके कार्यों में व्यवधान उत्पन्न कर सकता है। 29 मार्च के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण व्यापार में कुछ सुधार होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह समय सामान्य रहेगा।

05 अक्टूबर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। षष्ठस्थ गुरु एवं लग्नस्थ शनि के प्रभाव से व्यवसाय में उतार-चढ़ाव का योग बन रहा है। अतः इस समय के अंतराल में आपको अपने आत्मविश्वास को बनाए रखना चाहिए और बिना किसी पर विश्वास किये अपना कार्य करते रहना चाहिए। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो इच्छित लाभ नहीं मिलेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ प्रतिकूल रहेगा। शनि एवं गुरु का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आय के स्रोत प्रभावित होंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति में बहुत ज्यादा सुधार नहीं होगा। अष्टमस्थ राहु के कारण अचानक आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। 29 मार्च के बाद एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धन लाभ होगा। गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है।

जोखिम भरे कार्यों में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। आप किसी को उधार पैसा न दें वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं। शारीरिक बीमारी पर भी पैसा खर्च होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ मिला-जुला रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी जिससे परिवार में खुशी का वातावरण बनेगा परन्तु आपके

मातुल एवं ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध अच्छा नहीं रहेगा। संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। सामाजिक उन्नति के लिए भी समय बहुत अच्छा नहीं है।

29 मार्च के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको बड़े भाईयों का सहयोग मिलेगा। 05 अक्टूबर के बाद पत्नी के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं जिसका नकारात्मक प्रभाव आपके परिवार पर पड़ेगा। अतः उस समय के अंतराल में आपको अपने विवेक से काम लेना होगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं रहेगा। पंचम स्थान का मंगल गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात करा सकता है। बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है जिसके कारण आप मानसिक रूप से चिंतित रह सकते हैं। 29 मार्च के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके बच्चों की शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी। उनका अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा। आपकी संतान विवाह योग्य है तो उनका विवाह भी हो सकता है। दूसरे बच्चे के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा।

25 अगस्त के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। आपके बच्चों की उन्नति में व्यवधान आ सकता है अतः मन को एकाग्र कर शिक्षा के प्रति ध्यान केन्द्रित करें। 05 अक्टूबर के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए समय ज्यादा खराब हो रहा है। उसके खान-पान पर विशेष ध्यान दें।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ से ही स्वास्थ्य संबंधित परेशानियां होती रहेंगी। षष्ठस्थ गुरु के प्रभाव से पेट संबंधित परेशानी हो सकती है। घी या तली हुई वस्तु का सेवन कम करें। द्वादशस्थ शनि के कारण आप आलस्य व बीमारी जैसा अनुभव करेंगे। 29 मार्च के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके स्वास्थ्य में कुछ सुधार होगा।

25 अगस्त के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से प्रतिकूल होने के कारण मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान रह सकते हैं। अष्टमस्थ राहु अचानक आपका स्वास्थ्य प्रभावित कर सकते हैं। अतः अपना स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए सुबह-सुबह व्यायाम या योगाभ्यास करना लाभप्रद रहेगा। शारीरिक व्याधि दूर करने के लिए अन्न दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

छठे स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिल सकती है परन्तु उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा नहीं है। द्वादशस्थ शनि के कारण पढ़ाई में आलस्य व शिक्षा में व्यवधान आता रहेगा परन्तु 29 मार्च के बाद पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से समय काफी अनुकूल होगा। व्यावसायिक या तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय अच्छा रहेगा।

25 अगस्त के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। बेरोजगार जातकों को कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से वर्षारम्भ में ही आपकी विदेश यात्रा होगी। 29 मार्च से 25 अगस्त तक आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। अगस्त के बाद से छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी।

यात्रा के दौरान या वाहन चलाते सावधानी बहुत जरूरी है, क्योंकि अष्टम स्थान का राहु दुर्घटना का योग बना रहा है। यात्रा के अंतराल में आपका सामान भी चोरी हो सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

मानसिक द्वंदता के कारण वर्षारम्भ में पूजा-पाठ कम ही कर पाएंगे परन्तु दान पुण्य खूब करेंगे। भण्डारा करना या किसी गरीब की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। 29 मार्च के बाद मन्त्र जाप करेंगे। 05 अक्टूबर के बाद लग्न स्थान का शनि आपको बहुत ज्यादा आलसी बना सकता है जिससे आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित हो सकता है।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- शनिवार के दिन काला कम्बल गरीबों को दान करें। शनि मन्त्र का जाप करें।
- दुर्गा चालीसा का प्रत्येक दिन पाठ करें। दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions

